एकलव्य का प्रकाशन

नाव चली

एक चित्रकथा

वी. सुतेयेव

नाव चली

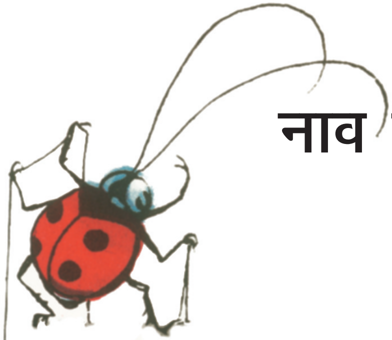

चित्र और कहानी

वी. सुतेयेव

एकलव्य का प्रकाशन

नाव चली

NAV CHALEE

स्टोरीज़ एण्ड पिक्चर्स की एक चित्रकथा
प्रगति प्रकाशन, मॉस्को के सौजन्य से प्रकाशित।

चित्र एवं कहानीः वी. सुतेयेव

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत शासन एवं
सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित।
संस्करणः दिसम्बर 2000/10,000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रणः अप्रैल 2007/10,000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रणः अक्तूबर 2007/3,000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रणः मई 2008/10,000 प्रतियाँ
चौथा पुनर्मुद्रणः अक्तूबर 2008/15,000 प्रतियाँ
पाँचवाँ पुनर्मुद्रणः नवम्बर 2008/30,000 प्रतियाँ
छठवाँ पुनर्मुद्रणः नवम्बर 2008/30,000 प्रतियाँ
सातवाँ पुनर्मुद्रणः दिसम्बर 2008/60,000 प्रतियाँ
आठवाँ पुनर्मुद्रणः दिसम्बर 2008/30,000 प्रतियाँ
100 gsm मेपलिथो व 130 gsm आर्ट कार्ड (कवर) पर प्रकाशित।
ISBN: 978-81-87171-92-8
मूल्यः 15.00 रुपए

प्रकाशकः एकलव्य
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017 फैक्सः (0755) 255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., फोन 2687 589

नाव चली

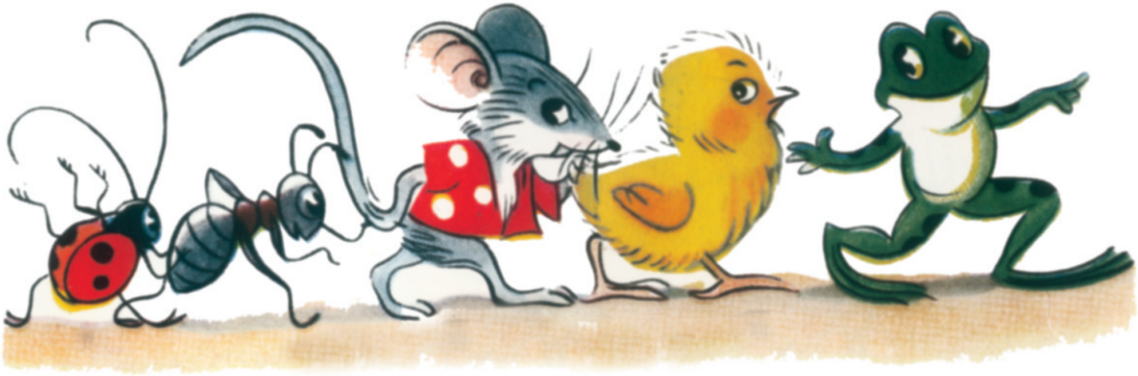

एक मेंढक, एक चूज़ा, एक चूहा, एक चींटी और एक गुबरैला सब सैर को निकले।

चलते-चलते वे एक झील के किनारे पहुँचे।

“चलो तैरें,” कहकर मेंढक पानी में कूद गया।

“पर हमको तो तैरना नहीं आता,” चूज़ा, चूहा, चींटी और गुबरैले ने कहा।

“ट्‌र्र ट्‌र्र ट्‌र्र। फिर तुम्हारा तो यहाँ कोई काम नहीं।” मेंढक हँसने लगा। और वह हँसता गया। इतना हँसा कि उसकी साँस अटकने लगी।

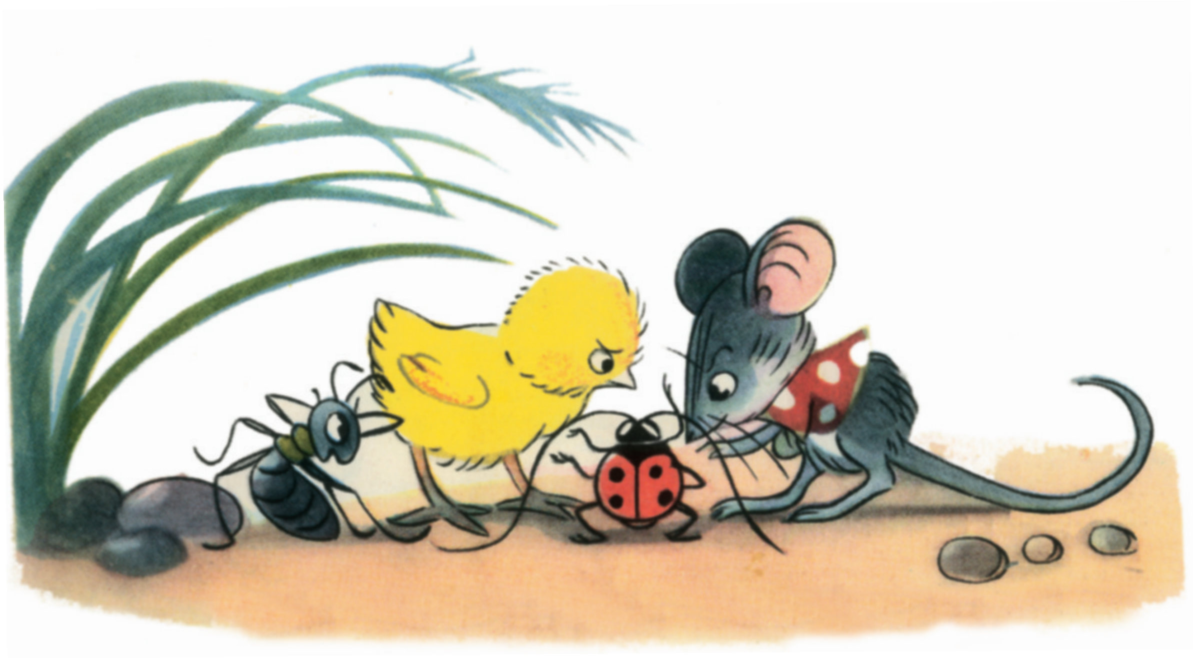

चूज़े, चूहे, चींटी और गुबरैले को बहुत बुरा लगा। उन्होंने कोई उपाय सोचने की कोशिश की।

वे सोचते गए, सोचते गए, सोचते गए। और फिर उन्होंने यह तरकीब निकाली।

चूज़ा गया और जल्दी
ही एक पत्ता लेकर
वापस लौटा।

चूहा एक अखरोट
का छिलका ले
आया।

चींटी एक सरकण्डा ले आई।

और गुबरैला काले धागे का
एक लम्बा टुकड़ा ले आया।

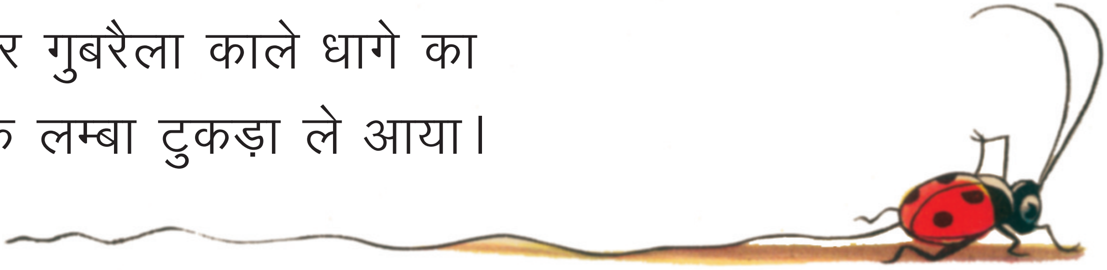

फिर वे सब काम में लग गए। उन्होंने सरकण्डे को अखरोट के छिलके के अन्दर फँसा दिया। और पत्ती को धागे से उसमें बाँध दिया। एक मिनट में ही सुन्दर नाव तैयार हो गई।

उन्होंने उसे पानी में धकाया और उस पर चढ़ गए। और चल पड़ी उनकी नाव।

मेंढक ने अपना
सिर पानी में से
बाहर निकाला।

वह फिर से हँसने
ही वाला था, पर
नाव तो बहुत-बहुत
दूर निकल गई
थी।

इतनी दूर कि अब वह उस तक पहुँच
ही नहीं सकता था।

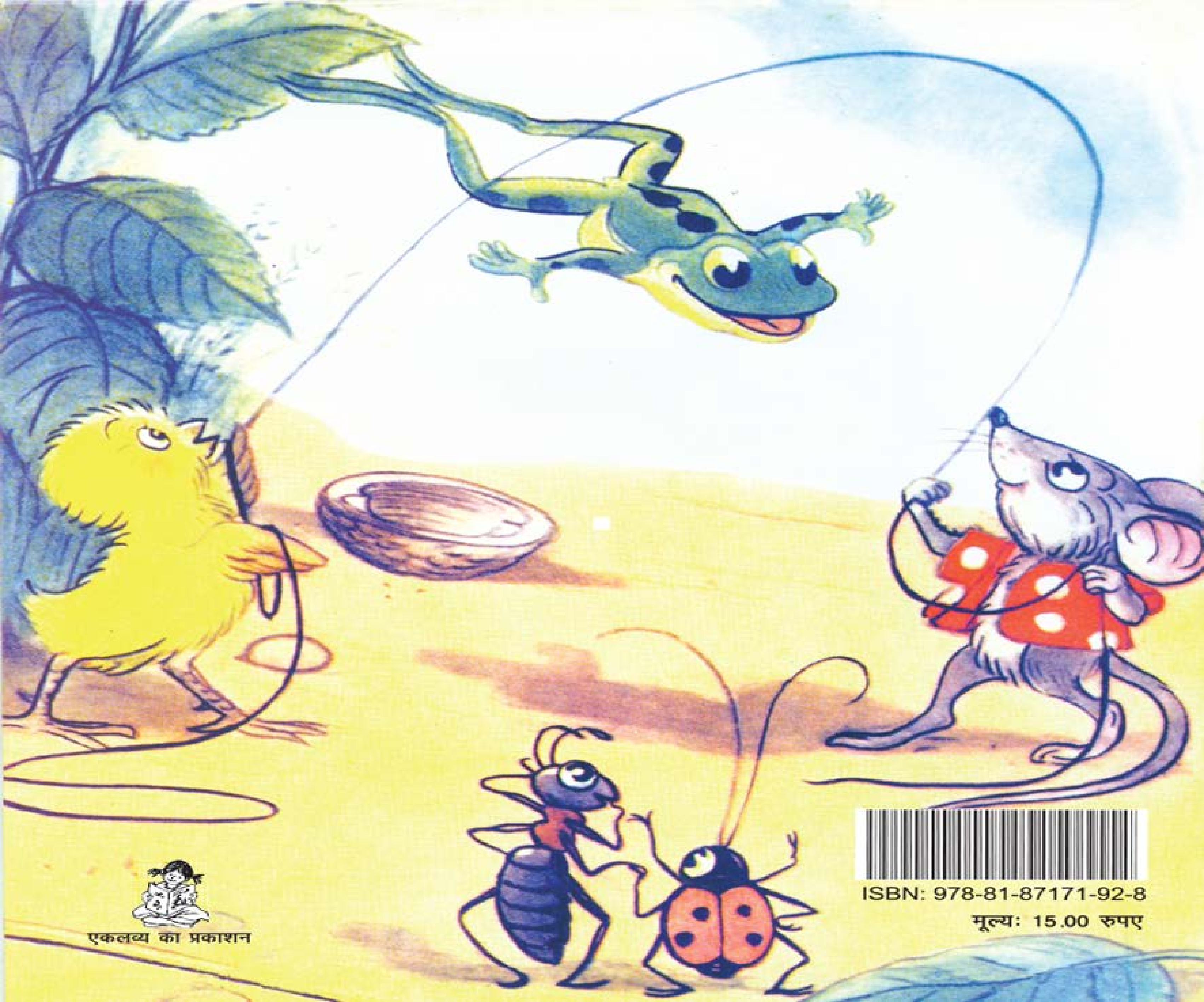

एकलव्य का प्रकाशन

ISBN: 978-81-87171-92-8

मूल्य: 15.00 रुपए